The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 4 | April 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

तथागत बुद्ध व महात्मा गांधी के विचारों में समन्वय: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

सतवीर राव

सीनियर रिसर्च स्कॉलर, गांधी एवं शांति अध्ययन-विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

ई-मेल: -satvirrao2596@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :
सकारात्मक दिशा, नैतिकता, उपभोक्तावादी समाज, आकांक्षा, आदर्श, प्राकृतिक संसाधन

ABSTRACT

विज्ञान और तकनीक के कारण समाज की पहल सकारात्मक दिशा की ओर गमित हुई हैं परंतु उनके सामाजिक संबंधों की दृश्या ओझिल होती जा रही हैं। जिसे सुस्पष्ट दृष्टि देने हेतु गौतम बुद्ध एवं महात्मा गांधी के आदर्शों को जानने एवं अपनाने की निरंतर जरूरत हैं। महात्मा बुद्ध का यह विचार की दुःखों का मूल कारण इच्छाएँ हैं, वर्तमान के उपभोक्तावादी समाज के लिये प्रासंगिक प्रतीत होता हैं। दरअसल प्रत्येक इच्छा की संतुष्टि के लिये प्राकृतिक या सामाजिक संसधानों की आवश्यकता पड़ती हैं। ऐसे में अगर सभी व्यक्तियों के भीतर इच्छाओं की प्रबलता बढ़ जाए तो प्राकृतिक संसाधन नष्ट होने लगेंगे, साथ ही सामजिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हो जाएगा। ऐसे में अपनी इच्छा को नियंत्रित करना समाज और नैतिकता के लिये अनिवार्य हो जाता हैं। ताकि भारत टिकाऊ और पूर्ण विकास पथ प्राप्त करने की आकांक्षा कर पाने में पूर्ण सक्षम हो सके। प्रस्तुत लेख में बुद्ध और गांधी के वैचारिक दर्शन के आधार मूल बिंदुओं को मानक मानकर व उनकी वर्तमान के तकनीक एवं विज्ञान के युग में समन्वय को आधार मानकर लेखन किया गया हैं। जिस हेतु गुणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया हैं। शोध पत्र लेखन में वर्णनात्मक विधि का रूपण भी विस्तृत होगा। इस हेतु द्वितीयक स्रोतों के साथ पत्र- पत्रिकाएं का भी उपयोग किया गया हैं। ताकि शोध पत्र लेखन की उत्कृष्टता अपने सही रूपों में फलित हो सके।

परिचय

शिक्षा, धर्म और दर्शन मनुष्य को बुद्धिमान और चरित्र निखारने का काम करते हैं। मनुष्य ज्ञान के अभाव में अपने जीवन का सही उद्देश्य समझ नहीं पाता। इसी हेतु उसे शैक्षणिक और तार्किक दर्शन को पढ़ा कर उसका सही अनुप्रयोग करना सिखाया जाता है जिससे वह न केवल अपने समाज को शिक्षित कर सके बल्कि संपूर्ण राष्ट्र को निखार सके। सामाजिक विज्ञान का अध्ययन विश्वव्यापी है। जिसका रूप अलग-अलग है परंतु उद्देश्य मानवीय समझ को बढ़ावा देने पर ही विशेष केंद्रित है। धर्म और दर्शन का महत्व बढ़ता जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर से लेकर समाज और परिस्थिति के अनुसार धर्म और दर्शन का निरंतर परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान समय में जिस प्रकार की परिस्थितियां दिखती है, प्राचीन काल में कई स्तरों पर उसमें विभिन्नता व्याप्त थी। इसी कारण गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी के विचारों को समझना अत्यंत जरूरी है। जिसमें गांधी के विचारों पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव केंद्र बिंदु के रूप में संलग्न है। वैसे तो देखा जाए तो सदी के महान विचारकों की समय अवधि में 2000 वर्षों से भी अधिक का समय अंतराल है, परंतु मानव कल्याण की सतत परंपरा दोनों के वैचारिक दर्शन में जीवंत रूप से समाहित दिखती है। प्राय: यह होता है कि मनुष्य अज्ञान-वस दुख नहीं समझ पाता है, इतना ही नहीं कभी-कभी तो वह भ्रांति वश दुख को भी सुख समझने लगता है। ऐसे लोगों को यथार्थ का बोध कराने के लिए भगवान बुद्ध एवं महात्मा गांधी ने दुख के लिए सत्य का प्रतिपादन अपने उपदेश, साहित्य तथा चिंतन से तत्कालीन समाज को निर्देशित किया है। उनका कहना है कि वह समस्त पदार्थ दुख है, जिनका उत्पाद पूर्व कृत तृष्णा क्लेशो से युक्त कर्मों द्वारा होता है। अति सूक्ष्म दुखता का बोध कर लेना ही वास्तव में दुख, सत्य का बोध है। वैश्वीकरण और तकनीक की आपा-धापी वाली विखंडन युक्त प्रक्रिया से यदि स्वतंत्रता प्राप्ति करना है तो भगवान बुद्ध और राष्ट्रपिता गांधी के मध्यम मार्ग व सतत अनुक्रम चिंतन मार्ग ही कार्य वर्धक हो सकेंगे। इनके वैचारिक दर्शन की समझ लंबे समय काल के विभिन्न राज्यों - साम्राज्य के अस्त और उदय होने वाले सूरज की व्यथा को बताते हैं। बौद्ध दर्शन पर अजातशत्रु , कालाशोक, अशोक से लेकर कुषाण शासक कनिष्क द्वारा बौद्ध संगीति आयोजित कर बौद्ध शिक्षा को प्रचारित व प्रसारित किया। गौतम बुद्ध, दुख निवारण के लिए सर्व सुख से संपन्न रहने पर भी संपूर्ण स्वराज, राज्य भार को त्याग कर वन में एकांत जीवन बिताने चले गए। वन में ही परंपरागत रूप से तपस्या द्वारा बुद्धत्व को प्राप्त किया, किंतु गांधी राजनीतिक पद को प्राप्त कर उससे जनादेश को अहिंसा का पाठ पढ़ाने हेतु राजनीतिक पद से दुराव कर कोलकाता चले गए। इसी परिप्रेक्ष्य में दोनों महान पुरुषों के कर्म चिंतन की ओर क्रियाशीलता परिपक्व दिखती है। जो भले ही विभिन्न समयावधि होने के कारण अलग-अलग आयामों में चित्रित है परंतु उसकी परिपूर्णता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बुद्ध का प्रभाव गांधी के

चिंतन पर दिखता है। जिसका अंततः उद्देश्य समाज और राष्ट्र को वैचारिक मतों के आधार पर उनकी मन:स्थिति को मजबूत करना रहा है।

अध्ययन का महत्व

समाज में सभी वर्ग और जाति को समानता का अधिकार भारतीय संविधान के बिभिन्न अनुच्छेदों के माध्यम से प्राप्त है। इसी हेतु यदि कोई जाति समूह शोषित हुआ हो तो केंद्र और राज्य का मुख्य उद्देश्य है कि उसे समाज के मुख्यधारा में लाए व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से कोई भी धर्म या दर्शन अपना सकता है इसके लिए उसे विचारकों के दर्शन की सुस्पष्ट और उपयोगी समझ होनी चाहिए। कल्याणकारी नीति उपगमों से ही हम मानव की जीवंत श्रृंखला का निर्माण कर सकते हैं ताकि कोई भी व्यक्ति अपने को असहाय व वंचित महसूस ना करें। इस पहल से भारत की सभ्यता और संस्कृति का फिर से जीवंत रूप देखने को मिलेगा। जिसमें गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी के दार्शनिक विचारों को बदलते वैश्विविकरण के दौर में सर्वप्रथम स्वयं को जानना जनउपयोगी हो सकता है जिसके विचारों की प्रबलता व्यक्ति और समाज को एक सुगम दिशा दे सकती है। भारत विविधता में एकता को समाहित करते हुए इस नीति दर्शन से मानवता का जन उपयोगी विश्वव्यापी आगाज कर सकता हैं।

साहित्य पुनरावलोकन

लेखक सर एडविन अर्नोल्ड भाषा अंग्रेज़ी प्रकाशित 1879 एक कथात्मक कविता ' द लाइट ऑफ एशिया' के रूप में, पुस्तक राजकुमार गौतम बुद्ध के जीवन और समय का वर्णन करने का प्रयास करती है , जो ज्ञान प्राप्त करने के बाद, बुद्ध बन गए, अर्थात जागृत व्यक्ति। पुस्तक छंदों की एक श्रृंखला में उनके जीवन, चरित्र और दर्शन को प्रस्तुत करती है। यह ललितविस्तर का मुक्त रूपांतर है। पुस्तक के प्रकाशन से कुछ दशक पहले, एशिया के बाहर बुद्ध और बौद्ध धर्म के बारे में बहुत कम जानकारी थी। अर्नोल्ड की पुस्तक पश्चिमी पाठकों के लिए बौद्ध धर्म को लोकप्रिय बनाने के पहले सफल प्रयासों में से एक थी। थियोसोफिस्टों से कविता प्राप्त करने के बाद , महात्मा गांधी चकित थे और मैडम ब्लावात्स्की और उनकी थियोसोफी की कुंजी के साथ उनके बाद के परिचय ने उन्हें अपने धर्म का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।[2] पुस्तक को पहली बार प्रकाशित होने के समय से ही अत्यधिक प्रशंसित किया गया है और कई समीक्षाओं का विषय रहा हैं। इसका हिंदी सहित तीस से अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है। सर अर्नोल्ड की प्रस्तावना उनके साथ समाप्त होती है: मुझे आशा है कि वह समय आ सकता है, "जब यह पुस्तक और मेरे भारतीय गीत और भारतीय आइडल उस व्यक्ति की स्मृति को

संजोए रखेंगे जो भारत और भारतीय लोगों से प्यार करता था"। पूर्व भारतीय मंत्री जयराम रमेश ने द लाइट ऑफ एशिया- द पोएम डिफाइंड द बुद्धा ऑन द लाइट ऑफ एशिया' का अभूतपूर्व प्रभाव लिखा कि लोग बुद्ध और उनकी शिक्षाओं को कैसे देखते हैं, इस कविता को " बौद्ध इतिहासलेखन में मील का पत्थर" कहते हैं, जिसने "कई जनता को प्रभावित किया" विभिन्न देशों में व्यक्तित्वों ने सामाजिक समानता के लिए आंदोलनों को प्रेरित किया और संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला और फिल्म में खुद को अवतरित किया। रमेश का उद्देश्य बुद्ध की जीवनी का विश्लेषण करना नहीं है, न ही अर्नोल्ड के "रिक्त पद" की साहित्यिक योग्यता का पता लगाना हैं। उनका कार्य हमें अर्नोल्ड और इतिहास और द लाइट ऑफ एशिया के विभिन्न उलझावों के बारे में बताना हैं। परिणाम एक ऐसे व्यक्ति का एक मनोरम अध्ययन है जिसने खुद को "भारत और भारतीय लोगों से प्यार करने वाला" कहा और उसका सबसे प्रसिद्ध काम, साथ ही साथ दुनिया भर में प्रसिद्ध व्यक्तियों के एक समूह पर और दोनों में से एक पर प्रभाव पड़ा। बौद्ध तीर्थ के सबसे महत्वपूर्ण स्थल। जयराम रमेश की द लाइट ऑफ एशिया को चार खंडों में विभाजित किया गया हैं। पहला खंड 1879 से पहले एडविन अर्नोल्ड के जीवन के तीन चरणों को शामिल करता है, दूसरा अर्नोल्ड और उनके द लाइट ऑफ एशिया का एक जुड़ा हुआ इतिहास है, क्योंकि दोनों ने दुनिया भर में यात्रा की थी; तीसरा अर्नोल्ड की मृत्यु के बाद द लाइट ऑफ एशिया के बाद के जीवन से संबंधित है।[3] और संक्षिप्त अंतिम खंड अर्नोल्ड के एक कश्मीरी संत और लालेश्वरी नाम की राजकुमारी के "कविता-कहने" के अनुवाद के "जिज्ञासु" मामलों और अर्नोल्ड के पोते की "खोज", भारतीय उपमहाद्वीप से उनके संबंध और इस तथ्य का वर्णन करता है कि उन्होंने विभिन्न धर्मों को अपनाया था। रमेश की पुस्तक "ए फाइनल वर्ड" के साथ समाप्त होती है, जिसमें वह द लाइट ऑफ एशिया की "स्थायी अपील" और इसके लेखक के उल्लेखनीय जीवन और योगदान को रेखांकित करता है। अपनी आत्मकथा में, महात्मा गांधी लिखते हैं कि जब दो थियोसोफिस्ट भाइयों ने उन्हें लंदन में पढ़ते समय अर्नोल्ड के भगवद गीता , द सॉन्ग सेलेस्टियल के संस्करण के साथ द लाइट ऑफ एशिया की एक प्रति दी थी। गांधी याद करते हैं कि "एक बार मैंने इसे शुरू कर दिया, तो मैं इसे छोड़ नहीं सकता था।"[4] भाइयों ने गांधी को ब्लावात्स्की लॉज में भी लाया और मैडम ब्लावात्स्की से उनका परिचय कराया। थियोसॉफी की अपनी कुंजी पढ़ने के बाद, गांधी को हिंदू धर्म पर और अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया था , अब मिशनरियों द्वारा इस धारणा का खंडन किया गया है कि हिंदू धर्म अंधविश्वास से भरा हुआ था । महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक "मेरे सपनों का भारत" में यह बताया है कि मेरे सपनों का स्वराज तो गरीबों का स्वराज होगा। जीवन की जिन सुविधाओं का उपभोग धनी लोग करते हैं, वहीं गरीबों को भी सुलभ होनी चाहिए। 2 जनवरी 1937 के 'हरिजन' में अपनी अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए गाँधीजी लिखते हैं- "स्वराज की मेरी कल्पना के विषय में किसी को गलतफहमी नहीं होनी चाहिये"। इसका अर्थ विदेशी

नियन्त्रण से पूर्ण मुक्ति तथा पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता है। प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-1956) में कहा गया था कि कोई योजना तब तक सफल नहीं होती जब तक देश के करोड़ों लघु किसान इसके लक्ष्यों को स्वीकार नहीं करते, इसके निर्माण में शामिल नहीं होते, अपना नहीं समझते हैं और उन्हें लागू करने के लिए तैयार नहीं होते। इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर सामुदायिक विकास कार्यक्रम शुरू किया गया जिससे ग्रामीण क्षेत्रों का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूपान्तरण किया जा सकें। महात्मा गाँधी ने अपनी पुस्तक "ग्राम स्वराज" मे पंचायती राज के संबंध में यह स्पष्ट किया गया है कि पंचायत राज की अवधारणा गाँधीवादी समाज कार्यकर्ताओं से संबंधित हैं। जिसमें राजनीतिक शक्तियों का विकेन्द्रीकरण, आंशिक शक्तियों तथा संपत्ति के विकेंद्रीकरण के साथ होना चाहिए। गाँधी जी ग्राम स्वराज में लिखते हैं कि पंचायत शब्द का शाब्दिक अर्थ ग्राम निवासियों द्वारा चयनित पांच प्रतिनिधियों की सभा से है जिनका चुनाव ग्राम के 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी स्त्री पुरुषों के द्वारा किया जाएगा। गाँधी का ग्राम स्वराज एक पूर्ण प्रजातंत्र की कल्पना थी। जिससे सुशासन की कड़ी जुड़ी होती है क्योंकि ग्राम स्तर के मजबूती से ही राज्य का ऊपरी आवरण मजबूत होगा। एस. आर. सिंह (2014)" "पंचायत एण्ड गुड गवर्नेस" प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बताया है कि 1990 के दशक में भारत में जन आधारित सुशासन के उद्देश्य से पंचायती राज संस्थाओं की स्थापना की गयी। बिहार में सर्वप्रथम 2001 में इन पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव हुए। आशा थी कि दो मूलभूत उद्देश्यों , जिनमें प्रथम गांधी जी के ग्राम स्वराज्य के स्वप्न को साकार करना जबकि द्वितीय लक्ष्य पंचायती राज संस्थाओं को ग्रामीण विकास को गति देने का साधन बनाना, की शीघ्र पूर्ति होगी। लेकिन इनमें वांछित परिवर्तन नहीं हो पाया, क्योंकि जमीनी स्तर (ग्रास रूट लेवल) पर पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से होने वाला सुशासन संतोषजनक नहीं था। दूसरे शब्दों में सुशासन की स्थापना करना मुख्य लक्ष्य बन गया। भारत जैसे देश में विद्वानों की आम राय के अनुसार सुशासन स्थापित करने हेतु निम्न कार्य करना आवश्यक है - पारदर्शिता के साथ सभी सेवाओं को दक्षता के साथ प्रदान करना तथा नीति निर्माण व कार्यान्वयन के सभी चरणों में आम जन की प्रभावी सहभागिता सुनिश्चित करना वर्तमान बिहार सरकार द्वारा सुशासन के संदर्भ में पंचायती राज संस्थाओं को और प्रभावी बनाने हेतु अनेक कदम उठाये जा रहे है तथा इस उद्देश्य हेतु पर्याप्त संसाधन भी उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। राज्य में विकास की गति बढ़ी है किन्तु ग्रामीण बिहार के सामाजिक व राजनैतिक विकास हेतु सिर्फ आर्थिक विकास पर्याप्त नहीं हैं। अतः ग्रामीण बिहार में सुशासन लाने की आवश्यकता हैं। सुशासन के कुछ मुख्य अवयव (अंग) निम्न प्रकार से है- दक्षता, पारदर्शी, संवेदनशील, प्रभावी, सहभागी, जवाबदेह, न्यायप्रिय (कानून का शासन),भ्रष्टाचार मुक्त शासन। यह भी तर्क दिया जाता है कि जब तक आमजन में जागरूकता नहीं होगी और उन्हें सूचनाएँ प्राप्त नहीं होंगी, वे प्रशासन की प्रक्रिया में अपेक्षित सहभागिता सुनिश्चित नहीं कर सकेंगे। दूसरे शब्दों में जब तक आमजन की प्रशासन में सहभागिता नहीं होगी, सुशासन स्थापित

नहीं किया जा सकता हैं। इस तथ्य से यह भी तर्क दिया जाता है कि जब तक आमजन में जागरूकता नहीं होगी और उन्हें सूचनाएँ प्राप्त नहीं होंगी, वे प्रशासन की प्रक्रिया में अपेक्षित सहभागिता सुनिश्चित नहीं कर सकेंगे। आधुनिक भारत का इतिहास" विपिन चंद्र द्वारा लिखी गई। यह पुस्तक इतिहास के उस काल का वर्णन करती है जो भारतीय इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण काल में से एक है। महात्मा गांधी ने कहा कि सत्य और अहिंसा ही केवल धर्म है जिसका मैं दावा करना चाहता हूं, कि मैं किसी भी पारा माननीय शक्ति का दावा ऐसी कोई शक्ति मुझ में नहीं है। लेखक ने गांधी के अनेकानेक विचारों को इस पुस्तक में समावेशित करने का प्रयास किया है। गांधी को लक्ष्य बहुत प्यारे थे। जिनमें प्रथम, हिंदू-मुस्लिम एकता , दूसरा छुआछूत विरोधी संघर्ष और तीसरा, देश की स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को सुधारना। अपने लक्ष्य को उन्होंने एक बार संक्षेप में इस प्रकार रखा था कि कोई भी उच्च और निम्न वर्ग नहीं होंगे बल्कि सभी समुदाय सद्भाव के साथ रहेंगे स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार होंगे। "भारत गांधी के बाद" रामचंद्र गुहा प्रस्तुत पुस्तक में लेखक द्वारा गांधी के पश्चात भारत को दर्शाने की कोशिश की है। रामचंद्र गुहा ने इस पुस्तक में संभवत, गांधीजी के बाद के सबसे विस्तृत इतिहास को लिखा है। अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में जागृति लाने का प्रयास किए हैं। आजादी के बाद की तमाम घटनाओं को संगठित करने का प्रयास किया है। "गांधी और गांधी विचार का सौर मंडल" रामजी सिंह द्वारा लिखी गई हैं। इस पुस्तक में लेखक ने अपने लेखनी के माध्यम से लिखा है कि गांधी एक व्यक्ति नहीं विचार है इनके साथ- साथ एक संस्था और समाज की भी संज्ञा बन गए हैं। जो बदलाव आप दुनिया में देखना चाहते हो वह बदलाव आप खुद अपने आप में लेकर आओ, महात्मा गांधी। प्रस्तुत लेखनी में लेखक द्वारा गांधी और उनके वर्तमान प्रासंगिक विचारों को समावेशित करने का प्रयास किया हैं। उपरोक्त साहित्य समीक्षा करने के पश्चात यह स्पष्ट है कि गांधी के विचारों पर बौद्ध दर्शन के प्रभाव का स्पष्ट दिखता हैं।

शोध-प्रविधि

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के अध्ययन हेतु गुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया हैं। शोध के अध्ययन हेतु ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक व वर्णनात्मक प्रविधि का उपयोग किया गया हैं। प्रस्तुत लघु प्रबंध मे सूचना को एकत्र करने के लिए द्वितीयक स्त्रोत का प्रयोग किया गया है जिसमे पुस्तक, पत्र, पत्रिकाओं, संस्मरण, आत्मकथाएं आदि का प्रयोग है।

निष्कर्ष व सुझाव

बुद्ध और गांधी के सिध्दांतों में काफी निकटता का बोध होता है जिसका आज के दुनिया में अधिक महत्व हैं। इनके द्वारा आत्मसात किए गए सिध्दांत- सत्य, अहिंसा, दया, आदि व्यक्ति और सामाजिक समृद्धि के मार्ग को प्रसस्त किया। इन दोनों महात्माओं का प्रादुर्भाव अलग अलग समय में हुआ किन्तु इनकी शिक्षाओं का प्रभाव आज भी दृढ़ है और वर्तमान समस्याओं के समाधान के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान प्रदान करता हैं। बुद्ध के सिध्दांत में चित्त की स्थिति, दया, और ज्ञान के माध्यम से दुःख का निवारण किया गया। उन्होंने सिखाया कि दुःख का जडता मन और अभिलाषा में है और मध्यम मार्ग का समर्थन किया— तपस्या और अनिंद्रिय सुख के बीच का संतुलित से जुडा है। इस आंतरिक शांति और अहंकार से मुक्त होने की प्रार्थना, वर्तमान समाज में वस्तुभोक्तवाद और उपभोक्तवाद के बीच महत्व रखता हैं। एक समय जहां तनाव, चिंता, और असंतोष प्रमुख हैं, स्मृति और अभिमान से मुक्ति का अभ्यास शांति और स्पष्टता प्रदान कर सकता हैं। ठीक उसी प्रकार, गांधी का सत्याग्रह, या अहिंसक विरोध- वीरता, सत्य, और प्रेम को बढावा देता हैं। गांधी ने असहिष्णुता के खिलाफ अमानवीय प्रस्ताव की शक्ति को दिखाया, विश्वास करते हुए कि व्यक्तियों को व्यभिचार से नहीं, बल्कि नीति से परिवर्तित किया जा सकता हैं। वर्तमान के विश्व में, जहां सामाजिक और राजनीतिक उलझन है, गांधी का द्वारा आत्मसात सिध्दांत आक्रमण के बदले प्रतिक्रिया का एक विकल्प हैं। संवेदनशीलता की ओर और वार्ता को बढ़ावा देते हुए, व्यक्ति और समुदाय में न्याय और परस्पर सम्मान स्थापित किया जा सकता हैं। इसके अलावा, बुद्ध और गांधी ने खुद को जागरूकता और नैतिक आचरण का महत्व दिया, जो एकता और सामाजिक कल्याण को बढ़ाने में सहायक हैं। उनकी शिक्षाओं ने सभी प्राणियों की आंतरिक जोड़ और दूसरों के प्रति दया का महत्व उजागर किया। विचार-विमर्श और विभाजन के युग में, उनका संदेश एकता और सहानुभूति का एक प्रभावशाली उपचार के रूप में अपनाया जा सकता है, बुद्ध और गांधी के दर्शन का वैश्विक रूपता के विकेन्द्रीकृत समाधानों के लिए एक रास्ता देता हैं। अहिंसा, दया, और आंतरिक परिवर्तन के सिद्धांतों को अपनाकर, व्यक्ति समाज में शांतिपूर्ण और समान्य भौतिक व्यवस्था का समर्थन कर सकता हैं। संकोच और असहमति से भरे युग में, इन महात्माओं के संदेश एक आशा और राह दिखाने का काम करता है, जो मानुष्य को एक अधिक आयामों में न्यायसंगत विश्व की दिशा में प्रयासित करने का सिख देता हैं। अतः हम कह सकते है कि 21वी सदी के विकसित भारत में सामाजिक न्याय, सामाजिक समरसता एवं शांति स्थापित करना चाहते है तो हमें बुद्ध और गांधी के आदर्शों पे चलने की आवश्यकता हैं। इन आदर्शों पर चलकर राष्ट्र निर्माण के सकारात्मक लक्ष्यों की ओर उन्मुख हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची: -

1. गोयंका, श्री सत्यनारायण (2004), '*राजधर्म- कुछ ऐतिहासिक प्रसंग (बौद्ध वाणी के परिपेक्ष में)*', (द्वितीय संस्करण) फरवरी,
2. एडविन, आर्नोल्ड, (1879), '*द लाइट ऑफ एशिया: भाषा अंग्रेजी*, जनरल प्रकाशक' लंदन
3. जयराम रमेश, (2021) '*द लाइट ऑफ एशिया: द पोयम डिफाइंड*', पेंगुइन प्रकाशक, लंदन ,यूनाइटेड किंगडन
4. गांधी, मोहनदास करमचंद, (1948), '*सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा*', नवजीवन प्रकाशन, गुजरात